
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
12th HISTORY
ARJUN BATCH
ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
हड़प्पा सभ्यता
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
21 सितंबर 2026 || 03:00 PM
RIICO
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
INDUS
VALLEY
CIVILIZATION
CITIES
PEOPLE
TRADE
CULTURE
LEGACY

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



५२२७

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सिंधु घाटी → 'हड़प्पा संस्कृति' सभ्यता

'संस्कृति'

पुरावस्तुओं का ऐसा समूह

- विशिष्ट शैली
- भौगोलिक क्षेत्र
  - भारत
  - पाक०
  - अफ०
- काल खण्ड
  - ↓
  - मेसोपोटामिया

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हड़प्पा

1.



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल निर्धारण

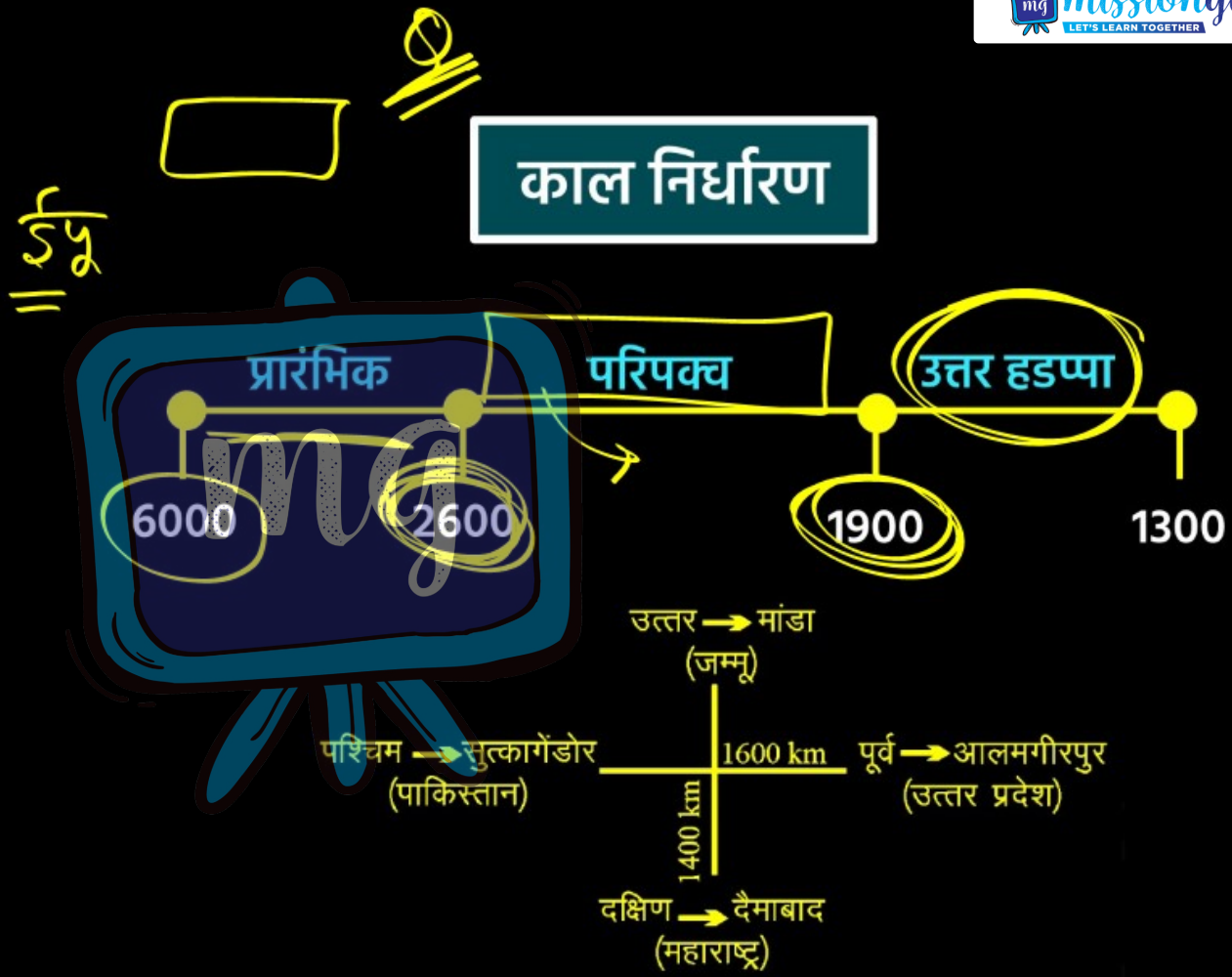

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हड़प्पा स० ⟶ बिज़नेस



व्यापारी
=

कृषि
=

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



निर्वाह के तरीके

विकसित हड़प्पा संस्कृति में निर्वाह के तरीके

- कृषि
- पशुपालन
- शिल्पकारी

जानकारी के स्त्रोत

- जले हुये अनाज के दानों तथा बीजों से
- जानवरों की हड्डियों से

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जले हुए अनाज के दानों तथा बीजों से मिली जानकारी

- पेड-पौधों से प्राप्त उत्पाद
- मछली
- बाजरे (गुजरात)
- गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना, तिल
- चावल के दानें कम

जानवरों की हड्डियों से प्राप्त जानकारी

- **पालतू जानवर**: मवेशियों, भेड़, बकरी, भैंस



- **जंगली प्रजातियां**: सुअर, हिरण, घड़ियाल



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

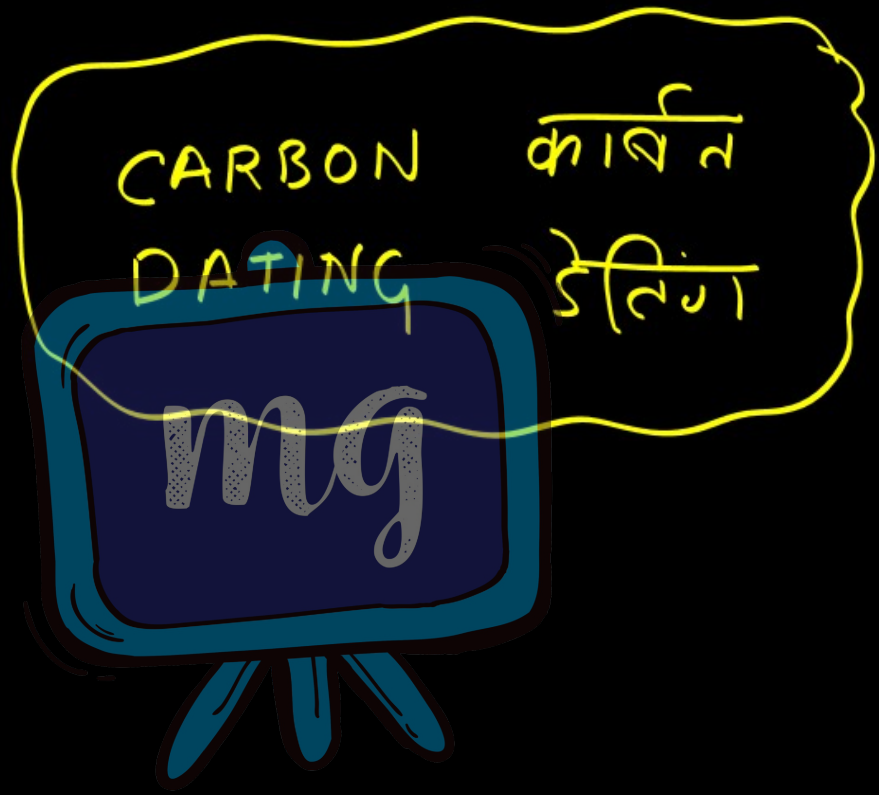

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. जानकारी के स्त्रोत

Q. जीवन निर्वाह के तरीके ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि प्रौद्योगिकी



❖ कृषि विधियां है क्या?

1. वृषभ



वृषभ + मुहरों पर रेखांकन = पुरातत्वविदों → खेत जुते हुए होंगे।

2. चोलिस्तान, बानावाली — मिट्टी के हल

3. फसलों की कटाई के लिए लकड़ी के हत्थों में पत्थर के फलकों या धातु के औजारों का प्रयोग करते थे।

4. कालीबंगा (राजस्थान) में जुते हुए खेत के साक्ष्य।

हल रेखा के 2 समूह समकोण पर कटते हैं

↓

अलग- अलग फसलें

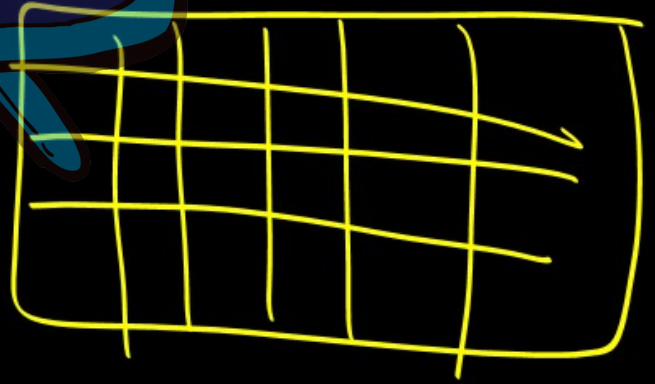

5. हड़प्पा स्थल अर्द्ध शुष्क थे।

सिंचाई की आवश्यकता थी।

- शोर्तुगई
  - नहरों के अवशेष
- धोलावीरा
  - जलाशय जल संचयन

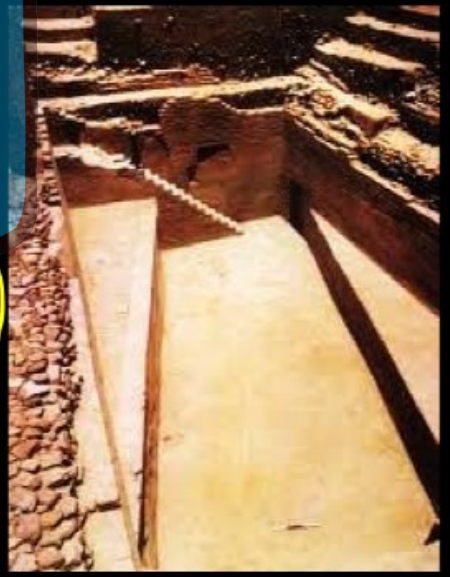

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

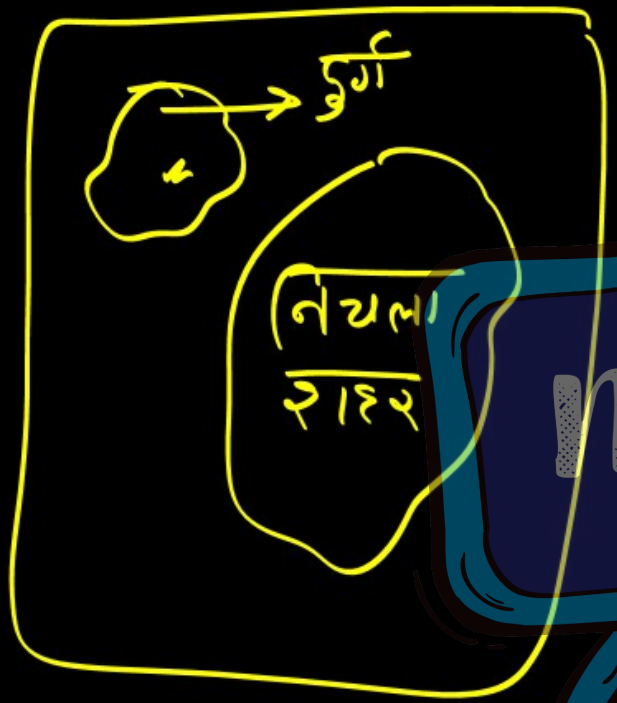

मोहनजोदड़ो

(एक नियोजित शहर) बस्ती

- छोटा (ऊँचाई) दुर्ग
- बड़ा (नीचा) निचला

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



निचला शहर

- यह भी दीवार द्वारा घेरा गया था। लेकिन फिर भी कई भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने थे।
- नियोजित जल निकास प्रणाली की अनूठी विशिष्टता थी।
- पहले नालियों के साथ गलियों को बनाकर फिर उसके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया।
- सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनायी थी जो एक दूसरे को समकोण पर भी काटती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q RBSE

गृह स्थापत्य

Q.

700

स्नानघर

ईंटे

सीढ़ियां



आंगन

चारों ओर कमरे

एकान्त का महत्व

कुऐं

700 (मोहनजोदडों)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

9 गृह स्थापत्य

1. दुर्ग // निचले शहर
2. मोहनजोदड़ो



1)
2) 1, 2 तल
3) आंगन
4) खिड़की → निजता
5) स्नानघर
6) 700 कुएँ

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दुर्ग

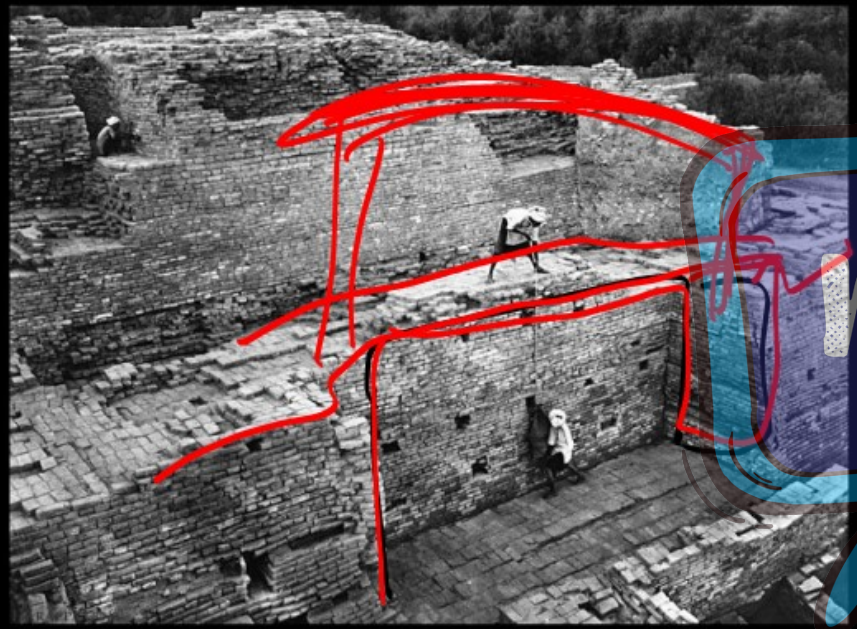

दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ मिली हैं।

(i) मालगोदाम :-

ईंटों से बने इनके निचले हिस्से ही शेष हैं। ऊपरी हिस्से संभवतः लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गये।

दुर्ग

(ii) विशाल स्नानागार :-

- चारों ओर से गलियारों से घिरा।
- तल तक जाने के उत्तरी व दक्षिणी भाग में सीढियाँ
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे का प्रयोग कर इसे जलबद्ध किया गया।

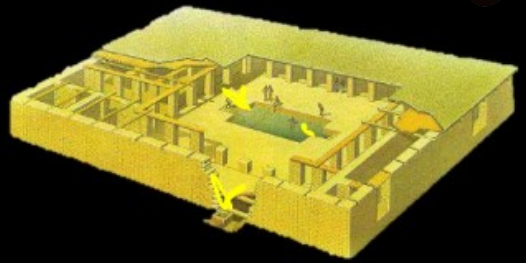

- इसके तीनों ओर कक्ष बने हैं, जिसमें 1 में 1 बड़ा कूआँ हैं।
- जलाशय का पानी एक बड़े नाले में जाता है।
- दूसरी ओर 8 स्नानघर हैं।

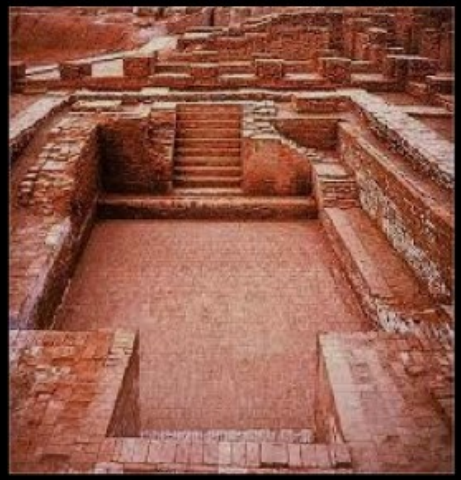

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये स्नानघर एक गली के दोनों ओर 4–4 हैं।
- प्रत्येक स्नानघर की नालियां गली के नाले से मिलती है।
- इसकी विशालता एवं अनोखापन यह दर्शाता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए होगा।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन ?

A. शवाधानों का अध्ययन

(1) शवाधान : शवों का गर्तों में दफनाया जाता था।

- गर्तों की बनावट एक दूसरे से भिन्न होती थी। क्योंकि कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की जाती थी जो कि सामाजिक भिन्नता का संकेत देती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. उपयोगी तथा विलास की वस्तुओं में वर्गीकरण

(a) उपयोगी वस्तुएं :– ये रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं हैं जो पत्थर या मिट्टी से बनायी जाती है।
जैसे- चक्कियां, मृदभाण्ड, सुइयां आदि। ये वस्तुएं सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

(b) विलास की वस्तुएं :– ये दुर्लभ या महंगी होती हैं। ये स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थ से अथवा जटिल तकनीक से बनती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

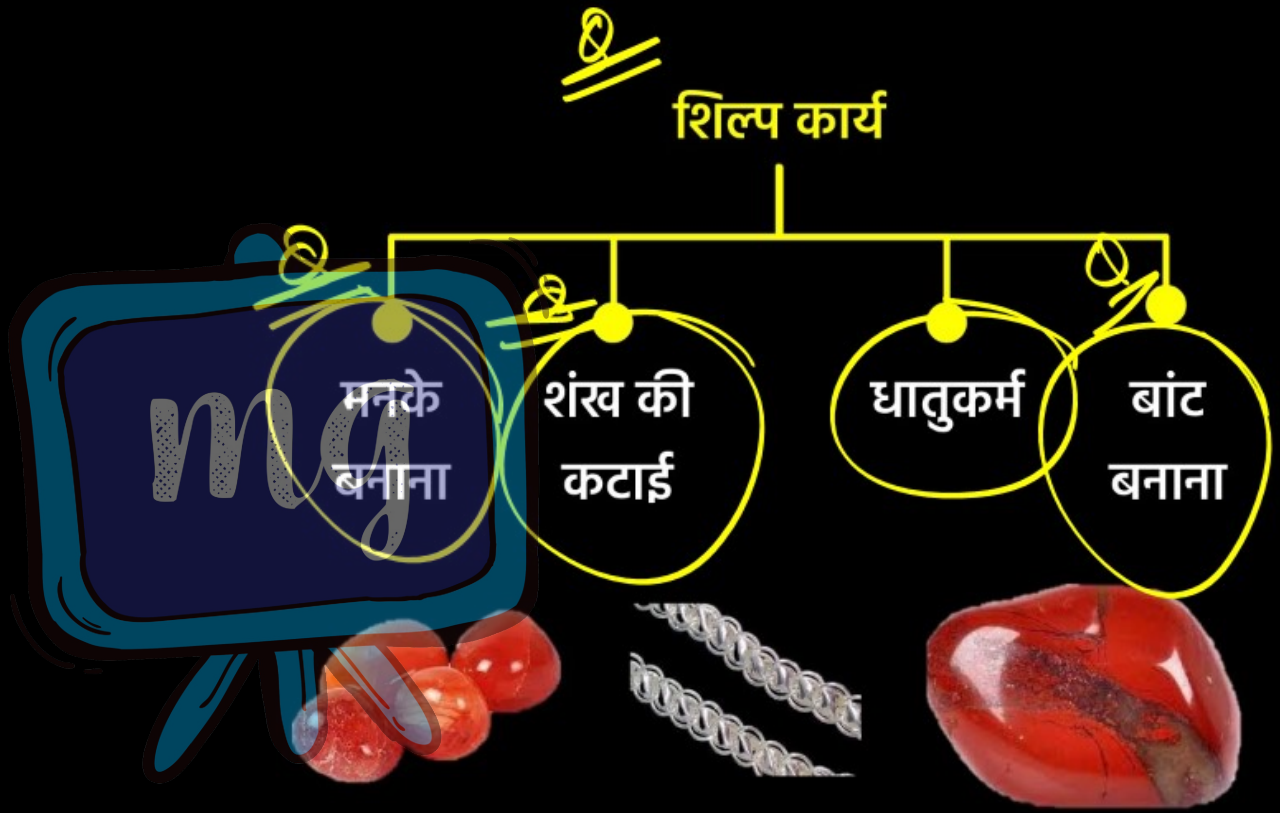

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. **मनकें बनाना :** मनकों का निर्माण विविध पदार्थों से होता था।
   - कार्निलियन (सुंदर लाल रंग का)
   - जेस्पर
   - स्फटिक
   - शैलखड़ी
   - तांबा
   - कांसा
   - सोना
   - शंख
   - फयान्स
   - पकी मिट्टी
   - लोहे ?

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

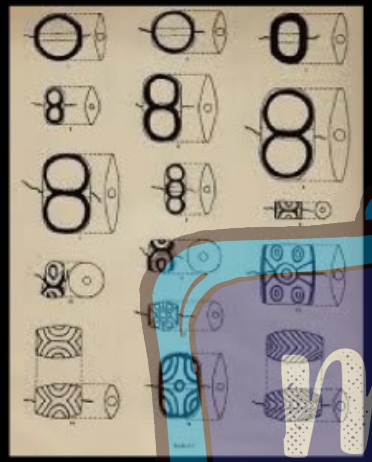

मनके कई आकार के होते थे

1. चक्राकार
2. बेलनाकार
3. गोलाकार
4. ढोलाकार
5. खण्डित







मनके बनाने की प्रक्रिया ?



- कच्चा माल
- तोड़ना/साँचे में ढालना
- आकार देना
- पकाकर रंग तैयार करना
- घिसाई
- पॉलिश
- छेद करना
- सजावट
- तैयार मनका

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मानचित्र 1
कुछ महत्वपूर्ण
विकसित हड़प्पा पुरास्थल
रेखाचित्र

2. **शंख से बनी वस्तुएँ :** शंख से चूड़ियां, करछियां और पच्चीकारी की वस्तुएं बनती थीं।

- नागेश्वर और बालाकोट, समुद्र तट के पास होने के कारण, शंख निर्माण के प्रमुख केंद्र थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्पादन केन्द्रों की पहचान

शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान पुरातत्वविद् कुछ चीजों को ढूंढकर करते हैं। जैसे-

(i) जहां पर प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, तांबा अयस्क जैसा कच्चा माल मिला हो।

(ii) औजार मिले हों।

(iii) अपूर्ण वस्तुऐं हों।

(iv) त्याग दिया गया माल और कूड़ा करकट मिला हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

माल प्राप्त करने संबंधी नीतियाँ (तरीके)

- शिल्प उत्पादन के लिए स्थानीय मिट्टी के अलावा पत्थर, लकड़ी और धातु बाहर से मंगाए जाते थे।

(i) बैलगाड़ियों के मिट्टी के प्रतिरूप मिले हैं, जो स्थल मार्ग के लिए बैलगाड़ी को परिवहन का महत्वपूर्ण साधन दर्शाते हैं।

(ii) सिंधु तथा इसकी उपनदियों के किनारे पर रहने वाले लोग नदी मार्गों का प्रयोग करते होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

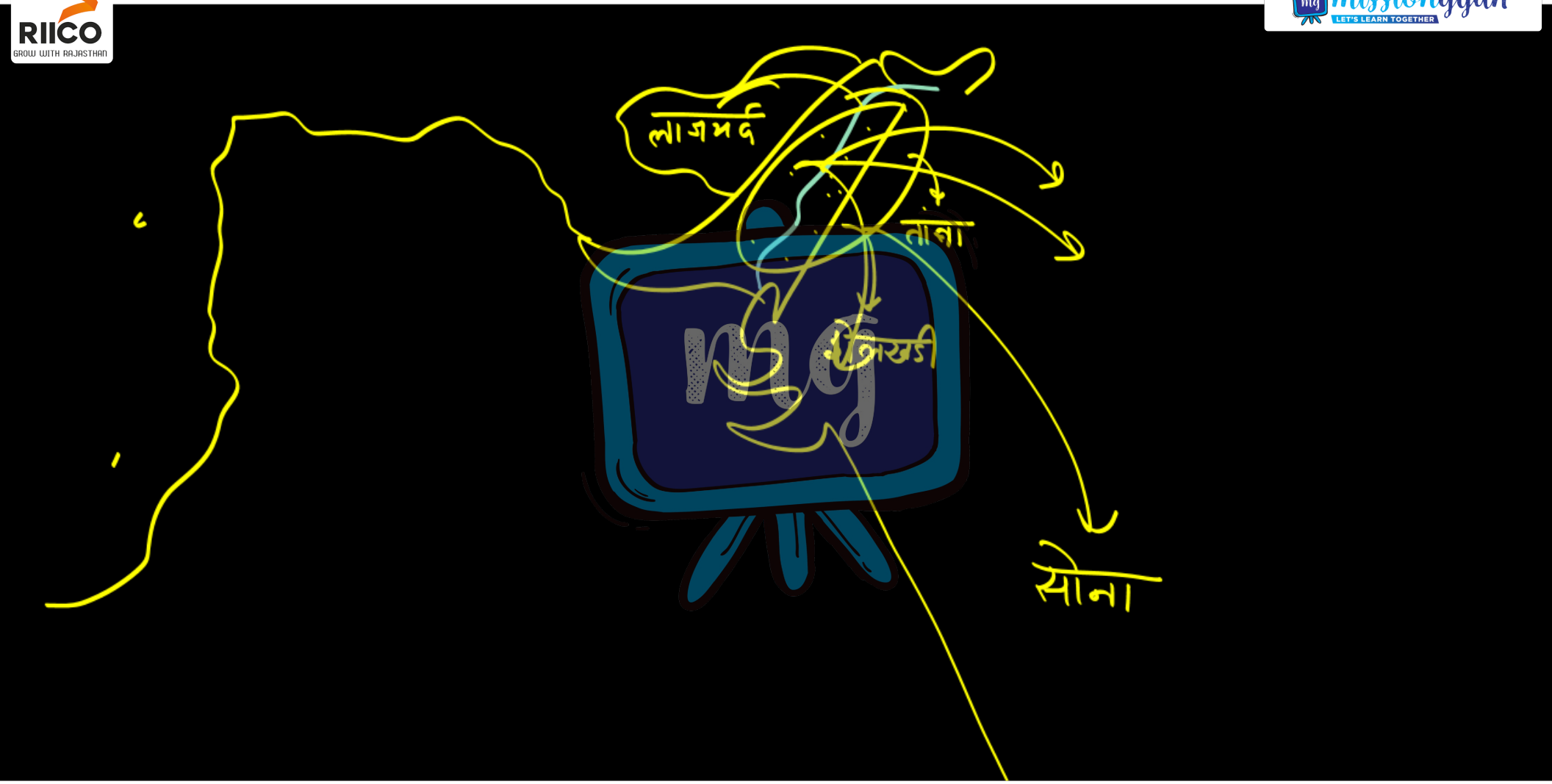

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल

- हड़प्पावासियों के कच्चा माल प्राप्त करने के तरीके:
- स्रोत के पास बस्तियाँ: सागेश्वर–बालाकोट (शंख), शोर्तुघई (लाजवर्द), लोथल (कार्निलियन, सेलखड़ी, धातु)
- अभियान भेजना : खेतड़ी (ताँबा), दक्षिण भारत (सोना)खेतड़ी क्षेत्र की संस्कृति को गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति कहा गया।

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क

लिपि

ओमानी तांबा



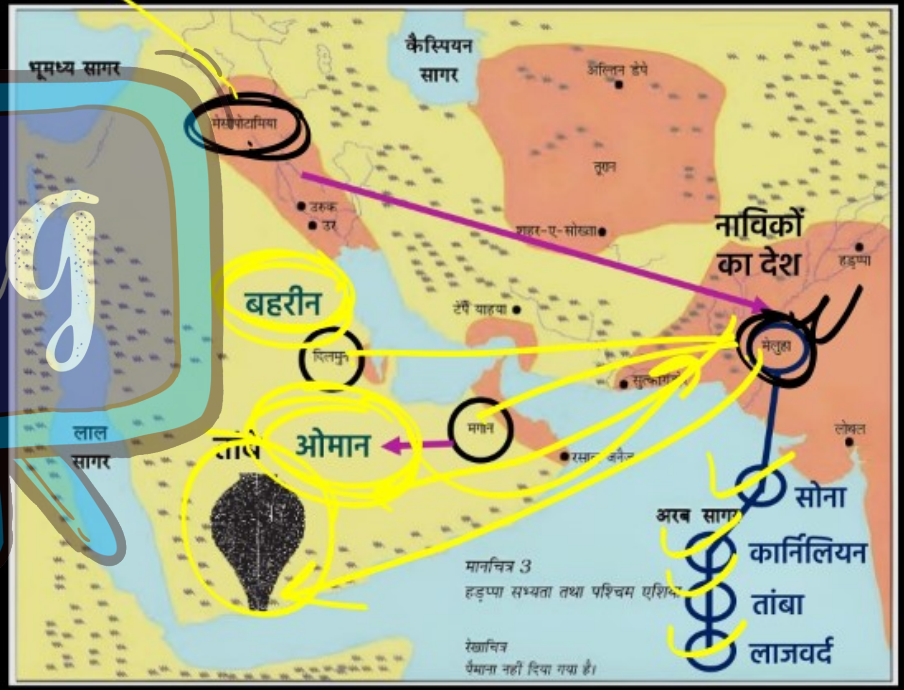

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पुरावस्तु

मुहरें

- सम्पर्क
- प्रेषक की पहचान
- अनपढ़
- धार्मिक
- छेड़-छाड़ तो नहीं की

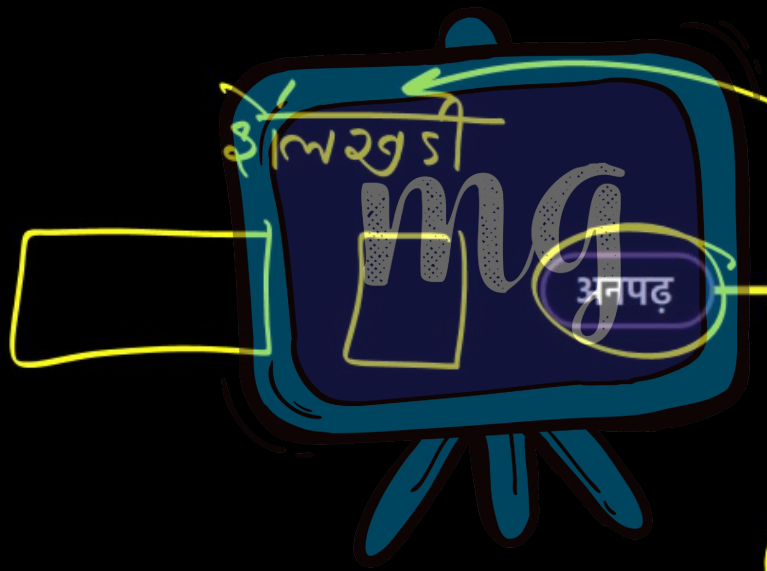



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लिपि (रहस्यमय)



एक प्राचीन सूचनापट्ट

- हड़प्पाई मुहरों में एक पंक्ति में लिखा हुआ संभवतः मालिक के नाम व पट्टी को दर्शाता है।
- इस पर बना चित्र (आमतौर पर जानवर का) अनपढ़ लोगों को सांकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था।
- अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त है सबसे लंबे अभिलेख में 26 चिन्ह हैं।

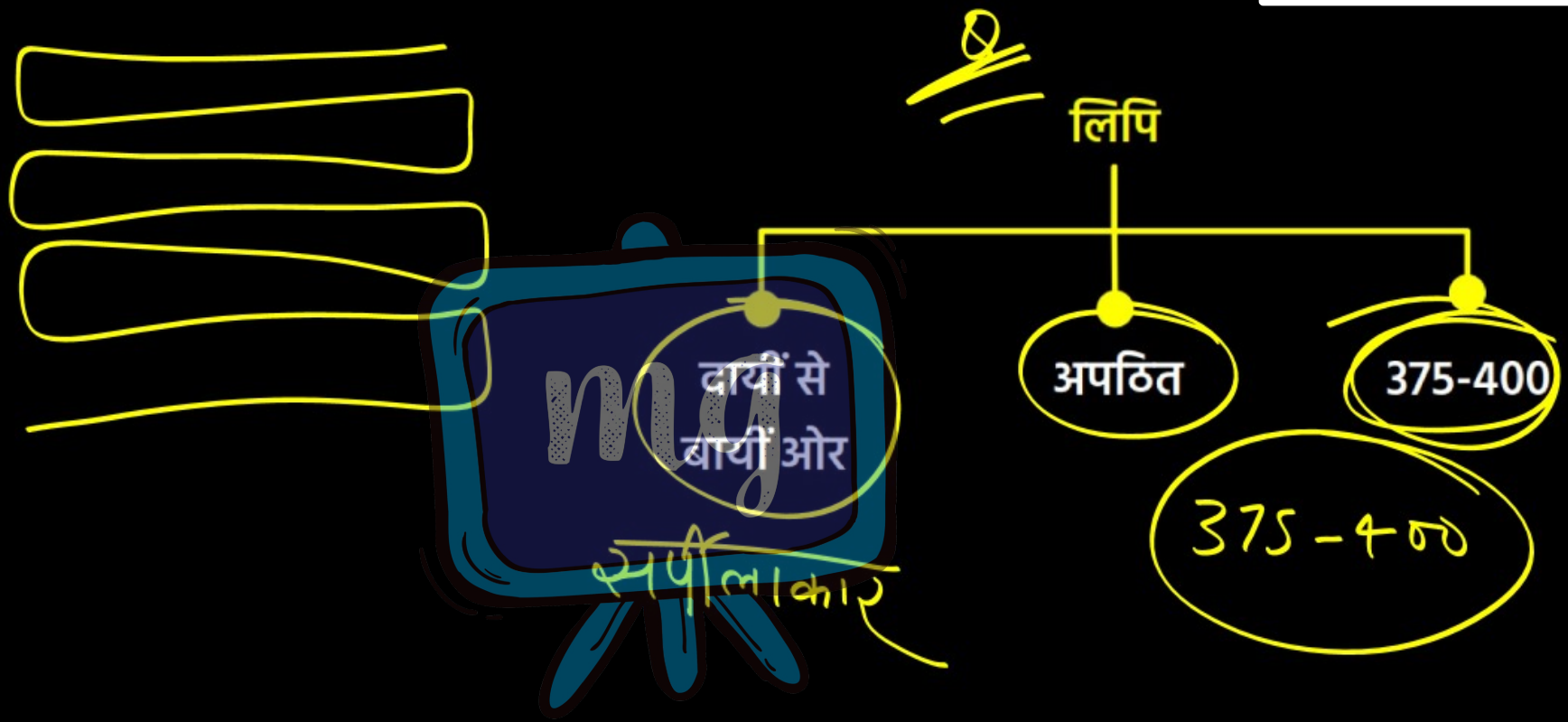
लिपि
अपठित
375-400
375-400
दायीं से
बायीं ओर
लिपिकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है, लेकिन यह वर्णमालीय नहीं लगती क्योंकि इसमें 375 से 400 चिन्ह हैं।
- वर्णमालीय लिपियों में स्वर और व्यंजन के चिन्ह होते हैं।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी, क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल और बाईं ओर संकुचन है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RBSE

बांट

- विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।
- बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- घनाकार आकृति के होते थे।
- इन बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे। जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।

- छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में किया जाता होगा।
- धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।

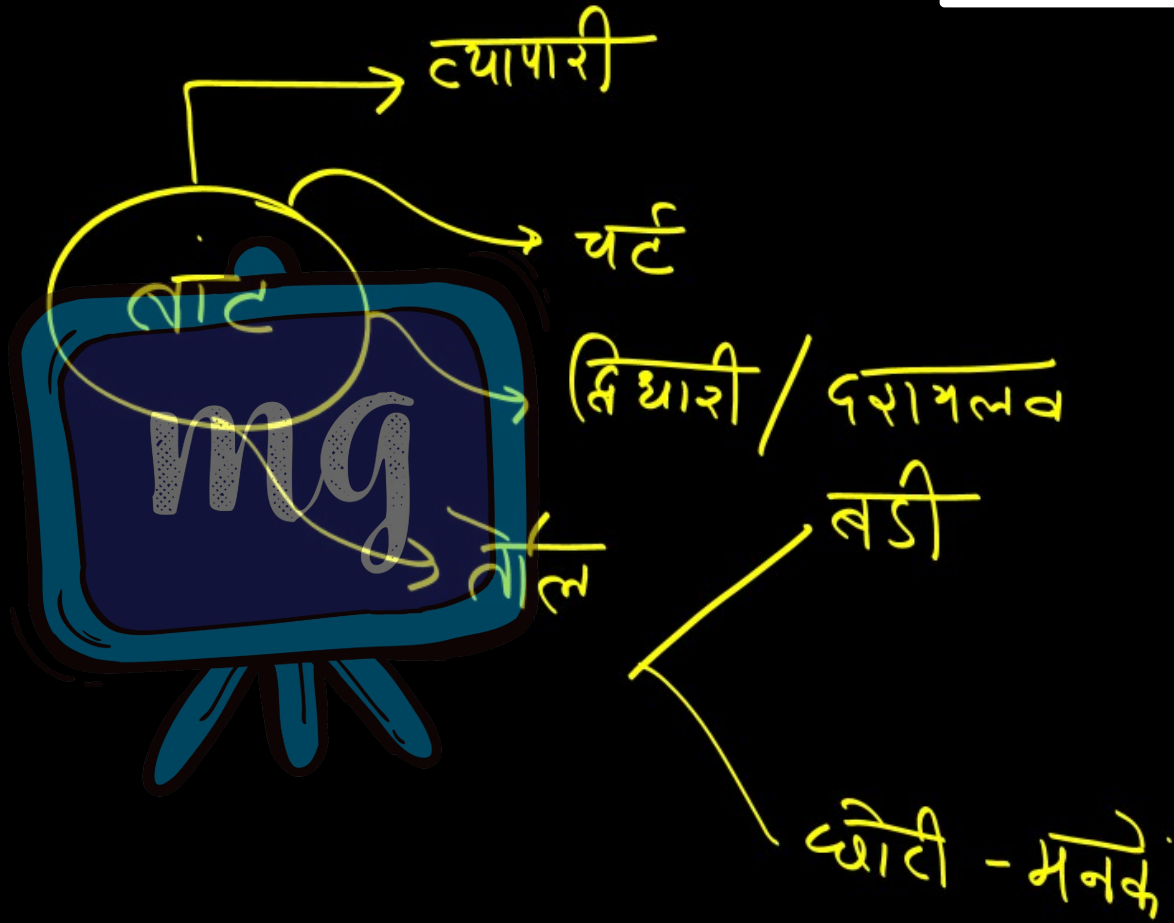

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बाट

- व्यापारी
- चर्ट
- द्विधारी / दरायलव
- तोल
  - बडी
  - छोटी - मनके

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q क्या ? → हाँ

प्राचीन सत्ता

- हडप्पाई पुरावस्तुओं में एकरुपता
- श्रम संगठित करना



- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रासाद तथा शासक

महल

- मोहनजोदड़ो के एक विशाल भवन को प्रासाद कहा गया, लेकिन कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिलीं।
- एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' कहा गया।
- यह नाम मेसोपोटामिया के 'पुरोहित राजाओं' से समानता के आधार पर दिया गया।
- मेसोपोटामिया की कीलाक्षर लिपि पढ़ी जा चुकी थी, जिससे यह तुलना संभव हुई।

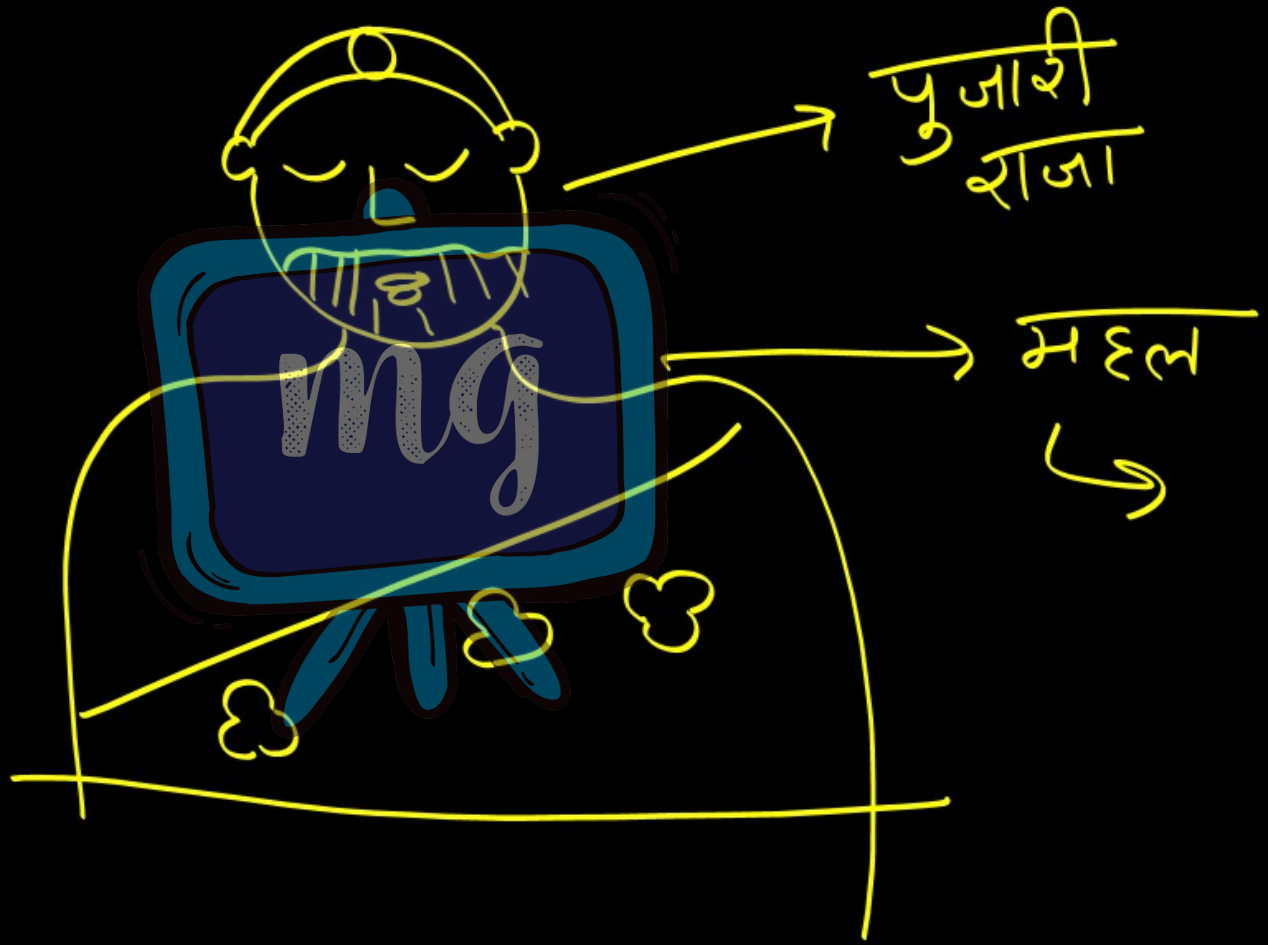
पुजारी
राजा
महल


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

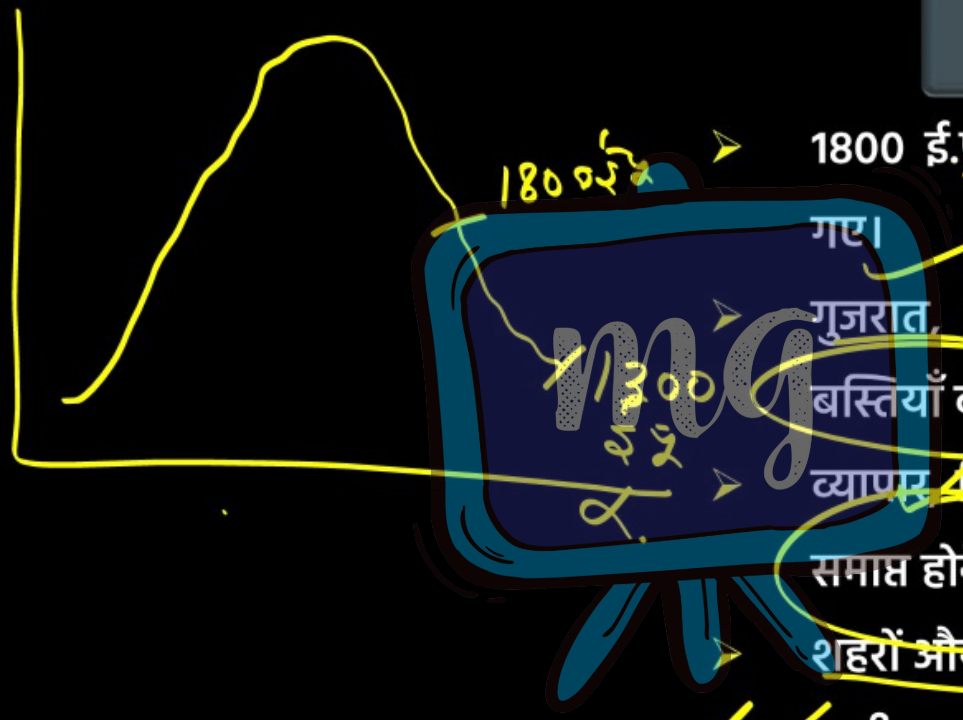

सभ्यता का अंत

- 1800 ई.पू. के बाद कई विकसित क्षेत्र छोड़ दिए गए।
- गुजरात, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नई बस्तियाँ बढ़ीं।
- व्यापार, शिल्प, मुहरें, लिपि, मानकीकृत बाँट आदि समाप्त होने लगे।
- शहरों और सार्वजनिक निर्माण का पतन हुआ।
- ग्रामीण जीवन प्रमुख हुआ — इसे उत्तर हड़प्पा संस्कृति कहा गया।
- प्रमुख कारण: राज्य के एकीकरण का अंत।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सभ्यता में परिवर्तन के कारण

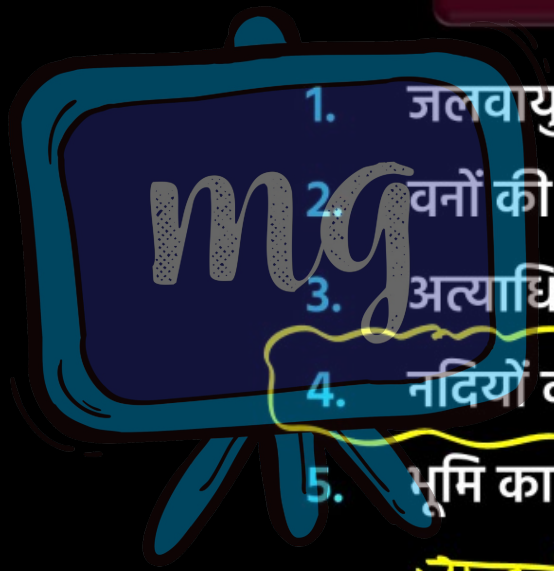

1. जलवायु परिवर्तन
2. वनों की कटाई
3. अत्याधिक बाढ
4. नदियों का सूखना
5. भूमि का अत्यधिक उपयोग

राजनीतिक

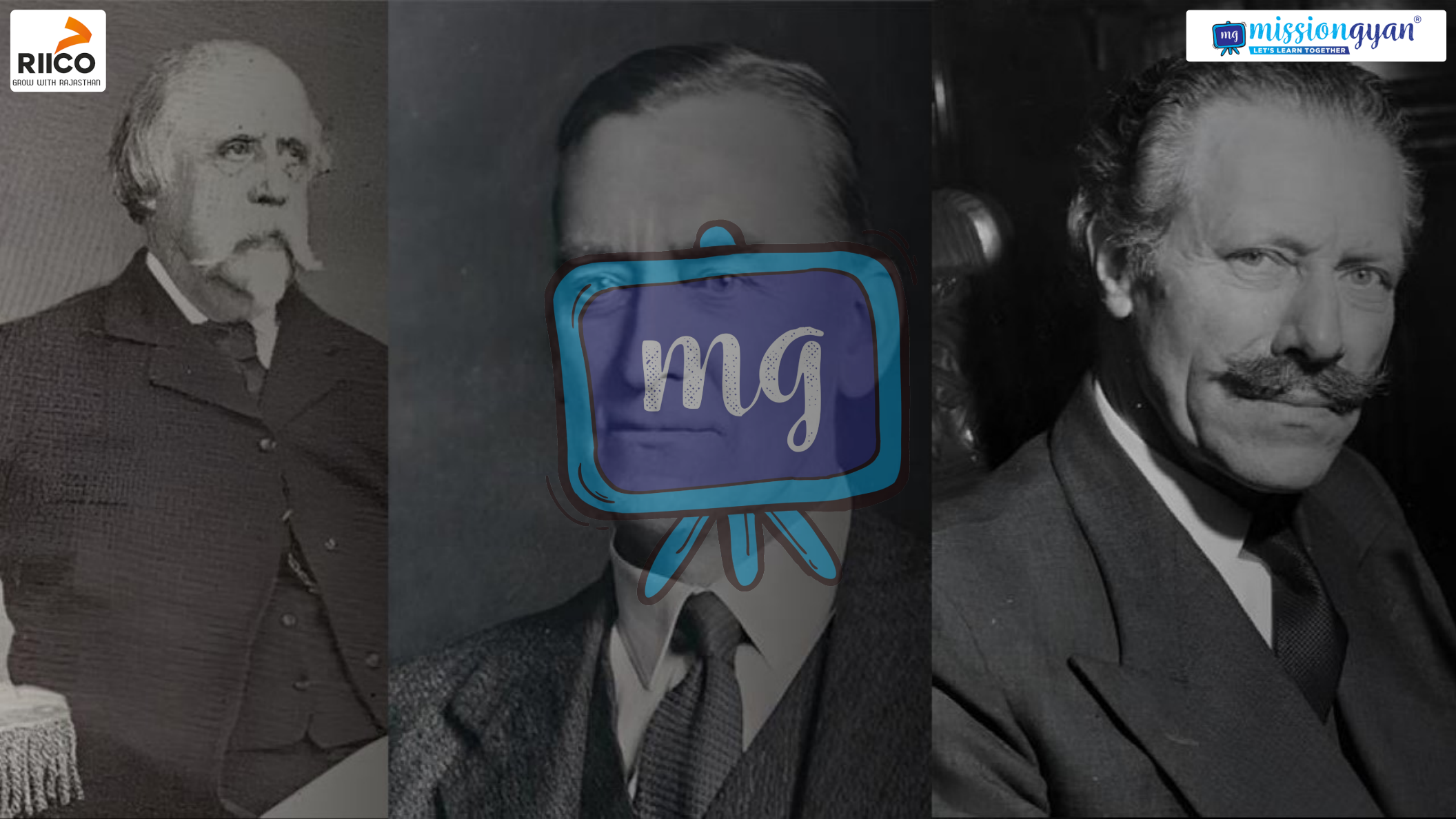

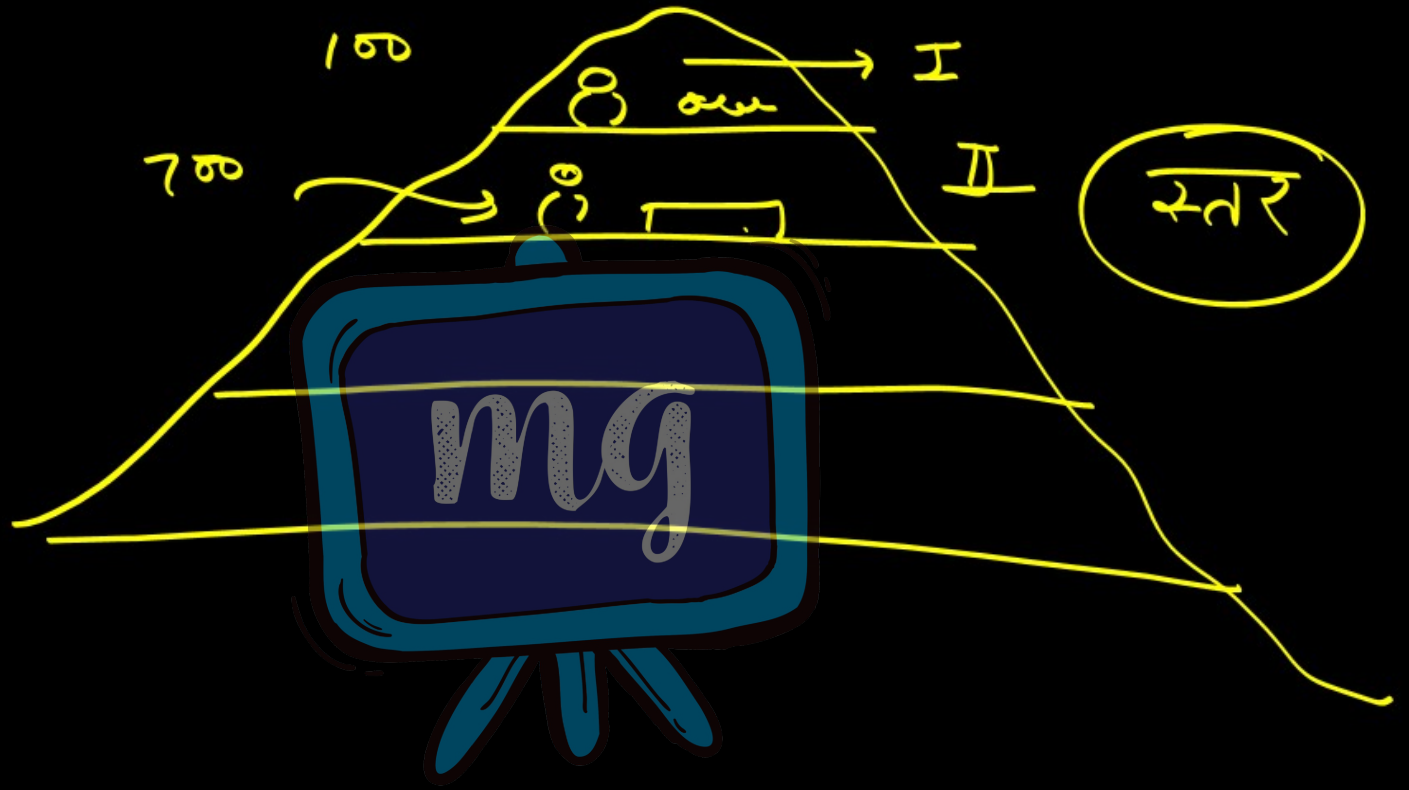
100
I
70
II
स्तर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याएं



- हड़प्पाई लिपि से सभ्यता के बारे में जानकारी नहीं मिलती।
- जैविक सामग्री जैसे कपड़ा, लकड़ी, चमड़ा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सड़ जाते हैं।
- पत्थर, पकी मिट्टी, और धातु ही संरक्षित रहती हैं।
- अधिकांश वस्तुएं पुनः चक्रित की जाती थीं, और अनुपयोगी वस्तुएं ही फेंकी जाती थीं।

- बहुमूल्य वस्तुएं या तो पहले ही खोजी जा चुकी थीं या संग्रहण में थीं।
- कई खोजें प्रारूपिक न होकर संयोजिक थीं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



खोजों का वर्गीकरण

(i) प्रयुक्त पदार्थों द्वारा : पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथी दांत आदि का उपयोग।

(ii) उपयोगिता के आधार पर : वस्तु औजार, आभूषण, या आनुष्ठानिक वस्तु हो सकती है।

(iii) अप्रत्यक्ष साक्ष्यों द्वारा : कपास के टुकड़े जैसी खोजें, मूर्तियों के चित्रण से पहनावे की जानकारी।

(iv) संदर्भों की रूपरेखाओं द्वारा : सही संदर्भ मिलने पर हड़प्पाई मुहर को समझा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

व्याख्या की समस्याएँ

- धार्मिक प्रथाओं की व्याख्या पुरातत्वविदों के लिए जटिल है।
  - (i) अपरिचित वस्तुओं को धार्मिक महत्व का माना गया।
    - (a) आभूषणों से लदी नारी मूर्तियां "मातृदेवी" के रूप में वर्गीकृत।
    - (b) मानकीकृत मुद्रा में बैठी पुरुष मूर्तियां "पुरोहित राजा" से जोड़ी गईं।

(c) विशाल स्नानागार और वेदियों को आनुष्ठानिक महत्व का माना गया।

- आद्य शिव की मुहरें ऋग्वेद के रुद्र के चित्रण से मेल नहीं खातीं।
- धर्म के आरंभिक और बाद के स्वरूप समान नहीं हो सकते।
- नीति "ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने" की पुरातत्व में उपयोगी हो सकती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

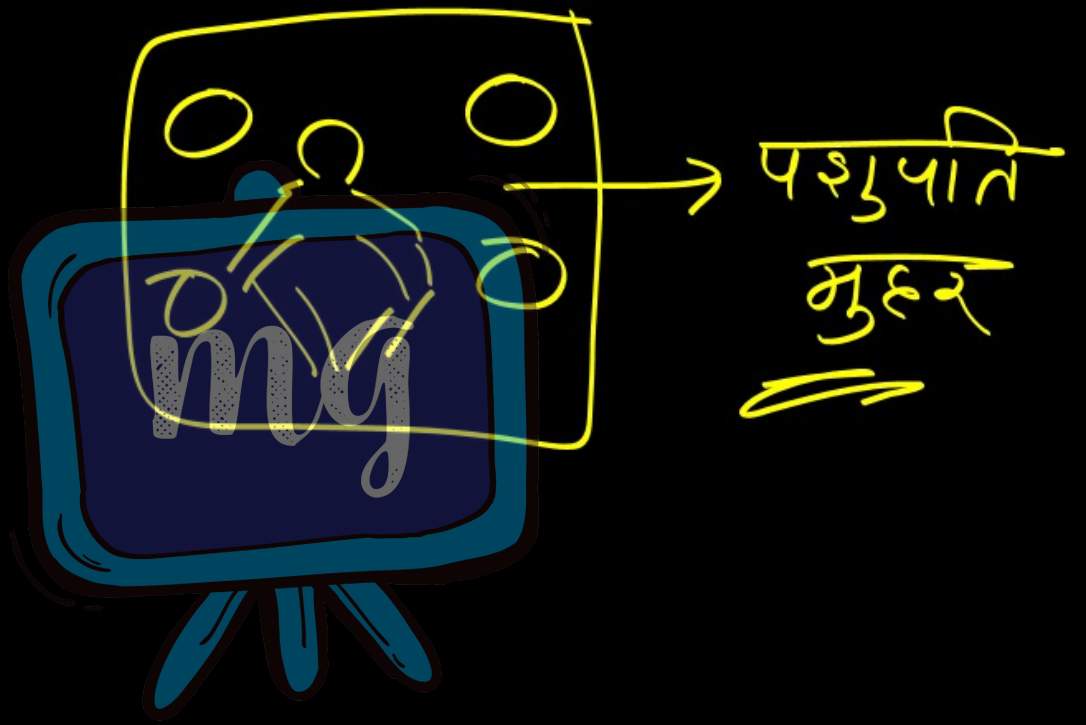

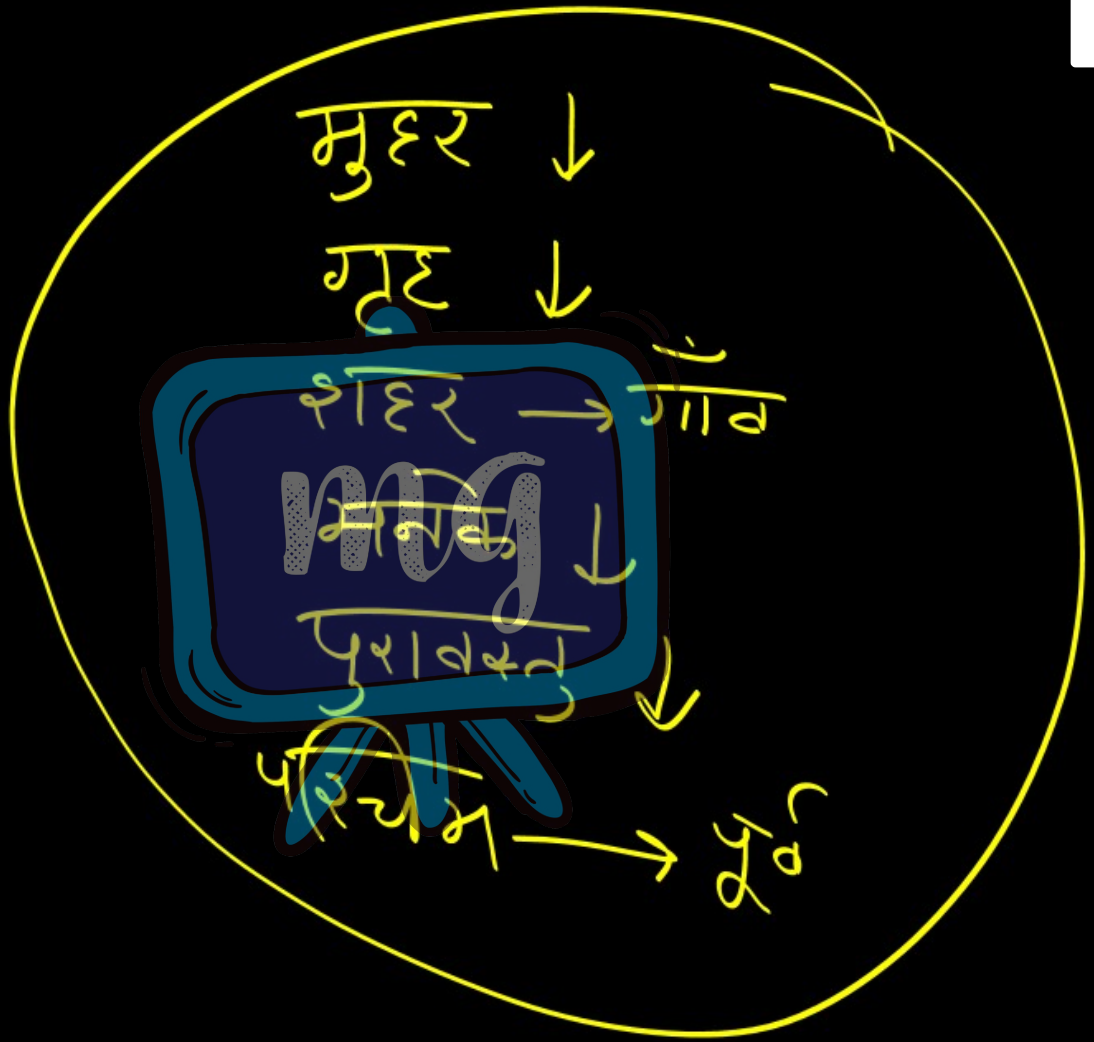
मुहर ↓
गृह ↓
शहर → गाँव
मनु ↓
पुरावस्तु
पश्चिम → पूर्व


90°
नालियां
गलियां
घर